दशम अध्याय
शास्त्रीय साहित्य

वैदिक साहित्य के प्रकीर्ण विचारों का विकास धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, दर्शनशास्त्र, काव्य–शास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र आदि में हुआ है। शास्त्रीय साहित्य का विकास वैदिक युग से ही प्रारम्भ होता है। व्याकरण, ज्योतिष, गणित, शिक्षा, निरुक्त जैसे शास्त्रों का विकास उत्तर वैदिक काल में वैदिक वाङ्मय को समझने के लिए हुआ था, जो कालान्तर में विभिन्न विभागों में विभाजित हो गये। उन शास्त्रीय ग्रन्थों पर अनेक टीकाएँ एवं भाष्य लिखे गये, जिनका उद्देश्य इन ग्रन्थों में वर्णित विषयों को स्पष्ट करना था। शिक्षा, व्याकरण एवं निरुक्त जैसे पृथक् शास्त्रों का कालान्तर में स्वरूप बदलता गया। ये तीनों शास्त्र लौकिक संस्कृत काल में व्याकरण में ही सम्मिलित हो गये।

यजुर्वेद में वर्णित यज्ञ–वेदिका तथा यज्ञशाला निर्माण की पद्धति एवं वेदिका के परिमाप के क्रम में भवन–निर्माण की शिक्षा के लिए वास्तुशास्त्र एवं गणित का उद्भव हुआ। सामगान के आधार पर *संगीत शास्त्र* की रचना हुई। अथर्ववेद में निरूपित भैषज्यसूक्तों का विकास चिकित्सा–शास्त्र एवं आयुर्वेद के रूप में हुआ। अथर्ववेद के राज–शास्त्र विषयक विचारों का रूपान्तरण राजनीति–शास्त्र जैसे पृथक् विषय के रूप

में हुआ। ज्योतिष से सम्बन्धित शास्त्रों की रचना वेदाङ्गों के आधार पर हुई। वैदिक कर्मकाण्डों, धार्मिक विचारों एवं उपनिषदीय ज्ञान का विस्तार धर्मशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र के रूप में हुआ। कालान्तर में विभिन्न आचार्यों के पृथक्–पृथक् चिन्तन की धारा से ***मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय*** एवं ***वैशेषिक*** इन ***छह आस्तिक*** एवं उनके विरुद्ध उठें विचारों से ***चार्वाक, जैन*** तथा ***बौद्ध*** सदृश ***नास्तिक*** दर्शनों की व्यवस्थित पद्धति का उद्‌भव हुआ।

क्रमशः वैदिक संस्कृत का स्थान लौकिक संस्कृत ने ले लिया। अतएव वैदिक शब्दों को समझना कठिन होता गया। ऐसे समय में विभिन्न शब्दकोशों की रचना हुई। वैदिक एवं लौकिक छन्दों को समझने के लिए छन्द–शास्त्र की पृथक् रचना हुई। 'यम–यमी संवाद' एवं पुरूरवा उर्वशी संवाद में पुष्पित नर–नारी के बीच प्रेम एवं कामुकता का विस्तार कामशास्त्र के रूप में हुआ।

ये सभी शास्त्र पहले प्रकीर्ण अवस्था में थे, किन्तु कालान्तर में उसकी गौरवमयी एवं विशाल परम्परा चल पड़ी।

(1) ***चिकित्सा –शास्त्र–*** संस्कृत साहित्य में चिकित्सा के विविध पक्ष अथर्ववेद में विशिष्ट रूप से निर्दिष्ट हैं। इसी का विकास आयुर्वेद के रूप में हुआ। सुश्रुत ने आयुर्वेद का निर्वचन किया है–***आयुरस्मिन् विद्यते;***

(3) ***छन्दःशास्त्र***–अनुष्टुप्, त्रिष्टुप,जगती जैसे वैदिक छन्दों का लौकिक संस्कृत में विस्तार हुआ है। वंशस्थ, वसंततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, उपजाति जैसे छन्दों का प्रयोग लौकिक संस्कृत में बहुलतया प्राप्त होता है। इन छन्दों में अनुष्टुप् सबसे छोटा एवं स्रग्धरा सबसे बड़ा छन्द है। इन छन्दों पर आचार्य पिङ्गल रचित *'छन्दःसूत्र'* प्राचीनतम ग्रन्थ है, जिसके आठ अध्यायों में वैदिक एवं लौकिक छन्दों के कुल 308 सूत्र संकलित हैं। इस सूत्रात्मक ग्रन्थ पर हलायुध की *'मृतसञ्जीवनी'* टीका प्राप्त होती है। राजा माधववर्मा रचित *'जनाश्रयी छन्दोविचितिः'*, जयदेव विरचित *'जयदेवच्छन्दः'* तथा जयकीर्ति कृत *छन्दोऽनुशासन* मध्य काल में लिखे गये छन्दोग्रन्थ हैं। इनमें केदारभट्ट कृत *'वृत्तरत्नाकर'* अत्यन्त प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ पर अनेक विद्वानों की टीकाएँ प्राप्त होती हैं। क्षेमेन्द्र कृत *'सुवृत्ततिलक'*, हेमचन्द्र कृत *'छन्दोऽनुशासन'* छन्दः शास्त्र के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। *'श्रुतबोध'* गणों की जटिलता को ध्यान में रखकर लिखा गया एक लोकप्रिय ग्रन्थ है।

(4) ज्योतिष तथा गणित

शुभमुहूर्त्त के ज्ञान, ग्रहों पर विचार, नक्षत्रों की गणना एवं काल गणना आदि के लिए ज्योतिष शास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ था। कालान्तर में ज्योतिष तीन भागों में विभक्त हो गया– *'सिद्धान्त'*, *फलित* एवं

गणित। आकाशीय पिण्डों की गतिस्थिति का अध्ययन शुद्ध ज्योतिष अर्थात् सिद्धान्त है। सिद्धान्तों का विकास वैदिक युग से वराहमिहिर तक खगोलीय–विद्या के रूप में होता रहा। सिद्धान्त ज्योतिष के अन्तर्गत नक्षत्रों की गतिविधि, विभिन्न कालों की गणना, ग्रहों का विचरण आदि पर वराहमिहिर (480 ई0) ने **'पञ्चसिद्धान्तिका'** में विचार प्रकट किये हैं। वराहमिहिर के अन्य ग्रन्थ हैं– (क) ***बृहत्संहिता*** (सिद्धान्त एवं फलित), (ख) ***विवाहपटल***, (ग) ***योग यात्रा*** (यात्रा में शकुन), ***बृहत् जातक*** एवं ***लघु जातक*** (दोनों जन्म कुण्डली विषयक)। वराहमिहिर की ***'बृहत्संहिता'*** में 106 अध्याय हैं। भारतीय भूगोल के साथ ही, यह विशालकाय ग्रन्थ सिद्धान्त ज्योतिष एवं फलित ज्योतिष दोनों से संवलित है।

लगध ने **'वेदाङ्गज्योतिष'** नामक ग्रन्थ की रचना की थी, । ज्योतिष का एक प्राचीन ग्रन्थ ***'सूर्यसिद्धान्त'*** है, जिसे वराहमिहिर ने (पाँचवीं शताब्दी ई0) संशोधित किया था। इसमें वर्ष का मान एवं आकाशीय पिण्डों की स्थिति स्पष्ट की गयी है। आर्यभट (जन्म 476 ई0) पाटलिपुत्र के थे, जिन्होंने ***'आर्यभटीय'*** नामक पुस्तक में ग्रहों की गणना के लिए ***'कलिसंवत्'*** को निश्चित किया। दो अन्य शुद्ध सिद्धान्त ग्रन्थों ***ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त*** एवं ***'खण्डखाद्यक'*** की रचना ब्रह्मगुप्त ने की थी।

मध्यकाल में भास्कराचार्य (द्वितीय) ने खगोल विद्या पर

'याज्ञवल्क्यस्मृति' (200–300ई.) धर्मशास्त्र का दूसरा प्रसिद्ध ग्रन्थ है। जो तीन अध्यायों में विभक्त है। इस पर विज्ञानेश्वर की *'मिताक्षरा'* नामक प्रसिद्ध टीका है। प्रथम शताब्दी ई0 की *'नारदस्मृति'* न्यायशासन का विवेचन करती है। अन्य प्रमुख स्मृतियों में ***पराशरस्मृति, बृहस्पतिस्मृति*** आदि प्राचीन हैं। बारहवीं शताब्दी में बंगाल के जीमूतवाहन का तीन खण्डों ***कालविवेक, व्यवहारमातृक*** एवं ***दायभाग*** में विभक्त ग्रन्थ 'धर्मरत्न' उल्लेखनीय है। इसका 'दायभाग' उत्तराधिकार, सम्पत्ति–विभाजन, स्त्रीधन, पुनर्मेलन इत्यादि विषयों पर आधुनिक भारतीय न्याय–प्रणाली का मेरुदण्ड है।

(7) ***राजशास्त्र (अर्थशास्त्र) :*** राजधर्म को प्रतिपादित करने वाले ग्रन्थ राजशास्त्र, दण्डनीति या अर्थशास्त्र कहलाए। प्राचीन धर्मशास्त्रियों एवं स्मृतिकारों ने भी राजनीति या राजधर्म का उल्लेख किया है, किन्तु राजनीति विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कौटिल्य के ***अर्थशास्त्र*** (300 ई0 पू0) को माना जाता है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र को परिभाषित करते हुए कहा है– ***मनुष्याणां वृतिरर्थः मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः, तस्याः पृथिव्या लाभपालनोपायः शास्त्रम् अर्थशास्त्रमिति*** (अर्थशास्त्र 15/1) अर्थात् 'अर्थ' शब्द मानवों की वृत्ति या मानवयुक्त भूमि का बोधक है। उसे प्राप्त करने या पालन करने के उपाय के लिए जो नियम हैं, वही 'अर्थशास्त्र ' है। यह गद्यात्मक शास्त्र 15 अधिकरणों,

150 अध्यायों तथा 180 प्रकरणों में विभक्त है। इस ग्रन्थ में कुछ श्लोक भी हैं। मौर्यवंश के प्रतिष्ठापक चाणक्य (कौटिल्य या कौटल्य) ने उस ग्रन्थ की रचना अनुशासन युक्त शासन–प्रणाली, राज्य की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा को ध्यान में रखकर की थी। इस ग्रन्थ में राजा, मन्त्री एवं अन्य राजनयिकों के कर्त्तव्य, विभिन्न प्रशासनिक विभागों के मध्य कार्य – विभाजन, कृषि, वन, दुर्ग, कोष, कर, मुद्रा, आदि का प्रबन्ध निर्दिष्ट है। इस प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रशासन के प्रबन्धन–सम्बन्धी गूढ़ विषयों से युक्त है। यह भारतीय राजनीतिशास्त्र का प्रथम एवं सर्वाधिक गौरवपूर्ण ग्रन्थ है।

(8) ***दर्शनशास्त्रः*** 'दर्शन' शब्द का अर्थ है साक्षात् देखना अर्थात परमतत्त्व का साक्षात्कार या अपरोक्षानुभव। 'दर्शन' शब्द के अन्तर्गत साक्षात्कार के साधनों को भी समन्वित किया गया है। ***'आत्मानं विद्धि'*** (आत्मा को जानो) यह भारतीय दर्शन का मूल है। भारतीय दर्शन साहित्य इस परम तत्व को सुचिन्तित दार्शनिक विचारों द्वारा अनुभव कराने का प्रयास करता है–

'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः'– बृह0 उप0 2/4/5

चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय दर्शन न्यूनाधिक इसे स्वीकार करते हैं।

भारतीय दर्शन के प्रमुख विचारों का स्रोत वेदो में प्राप्त होता है। विशेष रूप से उपनिषद् जो ज्ञान प्रधान हैं उनमें वेद के सिद्धान्तों का उत्कर्ष देखा जाता है। ये उपनिषद् ही विभिन्न भारतीय दर्शनों के मूल स्रोत है। वेदान्त की

वसुबन्धु का *'अभिधर्मकोश'* नामक ग्रन्थ वैभाषिक मत का निरूपण करता है। माध्यमिकों का प्रमुख ग्रन्थ नागार्जुन (दूसरी शती ई0) रचित *'माध्यमिककारिका'* है। कनिष्ककालीन नागार्जुन ने माध्यमिक सम्प्रदाय को प्रतिष्ठित दार्शनिक शाखा के रूप में स्थापित किया। महायान का सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध 'ग्रन्थ' *'महायान वैपुल्यसूत्र'* है जिसमें *'अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता, शतसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता, सद्धर्मपुण्डरीक,* आदि महायानसूत्र हैं जो प्रतीत्यसमुत्पादवाद एवं शून्यवाद का समर्थन करते हैं। योगाचार (विज्ञानवाद) का सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ *'लंकावतारसूत्र'* है, जो मूल संस्कृत में दस परिच्छेदों में है । स्वतंत्र–विज्ञानवाद या सौत्रान्तिक विज्ञानवाद के प्रतिष्ठापक आचार्य *दिङ्नाग* है, जिनका *'प्रमाण–समुच्चय'* जो आंशिक रूप से उपलब्ध है, संस्कृत में है। धर्मकीर्ति का *'प्रमाणवार्तिक'*, शान्तरक्षित का *'तत्त्व–संग्रह'* इस सम्प्रदाय के प्रमुख ग्रन्थ हैं।

भारतीय दर्शन में *छह* आस्तिक दर्शन है–*मीमांसा, वेदान्त, न्याय, वैशेषिक, सांख्य* एवं *योग।* प्रत्येक दर्शन का अपना विशाल साहित्य हैं।

सांख्य दर्शन निःसंदेह भारतीय दर्शन के प्राचीन सम्प्रदायों में है। परम्परानुसार *कपिल* को सांख्य का प्रतिष्ठापक आचार्य माना जाता है। इनकी रचना *'सांख्यसूत्र'* उपलब्ध होने पर भी विवादित है। *ईश्वरकृष्ण* की *'सांख्यकारिका'* सांख्य का प्राचीनतम प्रामाणिक ग्रन्थ है और सर्वाधिक

प्रचलित भी। ***वाचस्पति मिश्र*** ने इस ग्रन्थ पर ***'सांख्यतत्त्वकौमुदी'*** नामक प्रसिद्ध टीका लिखी है। भारतीय दर्शन में तत्त्व–साक्षात्कार हेतु योग का अत्यन्त महत्त्व है। योग सांख्य–सम्मत 'दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति' पर बल देता है। योग को ***'योगसूत्र'*** के रचयिता महर्षि ***पतञ्जलि*** ने दार्शनिक रूप दिया है। 'योगसूत्र' समाधि, साधन, विभूति एवं कैवल्य इन चार पादों में विभक्त है , जिसमें चित्त, चित्तवृत्तियाँ, अष्टाङ्ग योग, ईश्वर एवं कैवल्य तत्त्व का प्रतिपादन है।

सांख्य के बाद ***वैशेषिक*** दर्शन सर्वाधिक प्राचीन प्रतीत होता है। वैशेषिक 'विशेष' नामक पदार्थ का विवेचन करता है। इनके प्रवर्तक आचार्य ***कणाद*** (कणभुक्, काश्यप या औलूक) हैं। ***कणाद*** की रचना है– ***'वैशेषिक सूत्र'*** जिसपर आश्रित ***प्रशस्तपाद*** का ***'पदार्थधर्मसंग्रह'*** नामक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। ***उदयन*** की ***किरणावली*** तथा ***श्रीधर*** की ***'न्यायकन्दली'*** इसपर प्रसिद्ध टीकाएँ हैं। कालान्तर में न्याय ने वैशेषिक की तत्त्वमीमांसा स्वीकार कर ली तथा अपनी ज्ञानमीमांसा को विकसित किया और ये दोनों न्यायवैशेषिक के नाम से संयुक्त दर्शन बन गये। गौतम मुनि या ***गौतम*** जो अक्षपाद नाम से भी जाने जाते हैं प्राचीन ***न्याय*** के प्रवर्तक आचार्य हैं। इनकी रचना ***'न्यायसूत्र'*** है। न्याय का अर्थ है प्रमाणों द्वारा तत्त्व–परीक्षण। यह प्रमुखतया ज्ञानमीमांसा या तर्कशास्त्र है। लगभग चतुर्थ शताब्दी ई० पू० से

'सर्वदर्शनसंग्रह' में हुआ है। इसप्रकार भारतीय दर्शन साहित्य में संस्कृत ग्रन्थों की लम्बी परम्परा रही है।

काव्यशास्त्र – काव्यशास्त्रीय उद्भावनाएँ ऋग्वेद के उषा सूक्त में प्राप्त होती हैं। काव्यशास्त्र के अन्तर्गत काव्य, नाटकादि के स्वरूप, गुण–दोष, रीति, अलंकार, रस, शब्द–शक्ति आदि पर विचार होता है। काव्य–शास्त्र पर अनेक ग्रन्थ रचे गये हैं।

भरतमुनि का *'नाट्यशास्त्र'* संस्कृत काव्यशास्त्र का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है जिनमें नाट्य एवं काव्य से सम्बद्ध नियमों का विस्तृत विवेचन है। नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय है जिनमें मुख्यतः नाटकों के विभिन्न आयामों पर विचार किया गया है। नायक, नायिका, नाट्यवृत्तियाँ, रूपकों के भेद, रस–निष्पत्ति आदि इस ग्रन्थ के प्रतिपाद्य है।

भरत मुनि के अनन्तर *भामह* (छठी शबाब्दी) प्रथम आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन्होंने अपने *'काव्यालंकार'* में अलंकार को काव्य का प्रधान तत्त्व माना है। जहाँ नाट्यशास्त्र दृश्यकाव्य–विषयक है, वहीं यह ग्रन्थ शुद्ध काव्यशास्त्रीय है। भामह प्रथम आचार्य हैं जिन्होंने काव्य का लक्षण प्रस्तुत किया। छह परिच्छेदों वाले इस ग्रन्थ में काव्य के स्वरूप, अलंकार, दोष, न्याय तथा शब्दशुद्धि पर भी विचार किया गया है।

भामह के बाद अलंकारशास्त्र पर स्वतंत्र रूप से *'काव्यादर्श'* नामक

ग्रन्थ की रचना करने वाले, आचार्य ***दण्डी*** (700ई0) हैं। तीन परिच्छेदों वाले इस पद्यात्मक ग्रन्थ में काव्य–लक्षण, कथा–आख्यायिका में भेद, भाषा एवं शैली पर विचार किया गया है। दण्डी अलंकार–सम्प्रदाय के समर्थक थे, किन्तु रीतियों का भी इन्होंने विवेचन किया ।

वामन (800 ई0) रीति को काव्य की आत्मा मानते हैं– *'रीतिरात्मा काव्यस्य'*। वामन ने *'काव्यालंकारसूत्र'* में काव्य–शरीर, गुण–दोष, अलंकार एवं प्राचीन प्रयोगों पर विचार किया है। कश्मीरी आचार्य रुद्रट (850 ई0) को वैज्ञानिक आधार पर अलङ्कारों का वर्गीकरण प्रस्तुत करने का श्रेय प्रथमतः जाता है। उन्होंने अपने ग्रन्थ **'काव्यालङ्कार'** में अलंकार शास्त्र के समस्त सिद्धान्तों की समीक्षा की है। ध्वनि–प्रस्थान के प्रवर्तक के रूप में *'आनन्दवर्धन'* का स्थान सर्वोपरि है। ये कश्मीरी शासक अवन्तिवर्मा (855–883 ई0) के सभा–पण्डित थे। उनके पाँच ग्रन्थों में *'ध्वन्यालोक'* उनकी विश्व–विश्रुत कीर्ति का आधार है। ध्वन्यालोक का महत्त्व इसी से समझा जा सकता है कि इस ग्रन्थ ने संस्कृत काव्यशास्त्र में ध्वनि के समर्थक एवं विरोधी लेखकों का प्रबल विवाद आरम्भ किया जिसकी समाप्ति मम्मट के काव्यप्रकाश में हुई। ध्वन्यालोक पर ही **अभिनवगुप्त** ने (1000 ई0) ने ध्वनि–सिद्धान्त को पुष्ट करते हुए *'ध्वन्यालोकलोचन'* नामक टीका लिखी। इनका अन्य काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ *'अभिनवभारती'* है जो नाट्य शास्त्र पर एक मात्र उपलब्ध

विशेषता इसमें व्याप्त स्वनिर्मित उदाहरण हैं। ग्रन्थ अपूर्ण होते हुए भी प्रगाढ़ है।

इस प्रकार काव्यशास्त्रियों की दीर्घ परम्परा संस्कृत में रही है जिससे अन्य भाषाएँ भी अनुप्राणित होती रही हैं।

संस्कृत के शास्त्रीय ग्रन्थों की चर्चा में एक बात स्पष्ट है कि संस्कृत विद्वानों का विभिन्न शास्त्रों के क्षेत्र में व्यापक योगदान रहा है। संस्कृत में व्याकरण का क्षेत्र हो, या धर्मशास्त्र या दर्शन या नीतिशास्त्र का , इतने प्रौढ़ ग्रन्थ अन्य भाषाओं में अत्यल्प हैं। भारतीय ज्योतिष या आयुर्वेद की पताका आज सम्पूर्ण विश्व में देखी जा सकती है। भारतीय दर्शन–चिंतन की विरल धारा ने सम्पूर्ण विश्व को भारत की ओर आकृष्ट किया है। संस्कृत काव्यशास्त्र अपनी समीक्षा–पद्धति से पाश्चात्त्य समालोचना का पथ प्रदर्शन करता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र आज के प्रशासनिक तंत्र का आधार–स्तम्भ है। इस प्रकार शास्त्रीय संस्कृत साहित्य का योगदान आधुनिक परिप्रेक्ष्य में व्यापक है।

अभ्यास

1. शास्त्रीय साहित्य से क्या समझते हैं? आलोचना करें।
2. वेदों में वर्णित विविध शास्त्रों का संक्षिप्त वर्णन करें।
3. चिकित्साशास्त्र में लिखित विभिन्न ग्रन्थों का परिचय दें।
4. 'कोशग्रन्थों की एक लम्बी श्रृंखला है, तत्सम्बद्ध ग्रन्थों का उल्लेख करें।
6. पाणिनीय ग्रन्थ किस शास्त्र के अन्तर्गत आते हैं ? उन पर प्रकाश डालें।

7. भट्टोजिदीक्षित की रचनाओं पर एक आलेख लिखें।

8. दर्शनशास्त्र के पाँच ग्रन्थों का परिचय दें।

9. काव्यशास्त्र के मुख्य ग्रन्थ कौन–कौन से हैं?

10. टिप्पणी लिखें– *धर्मशास्त्र, सांख्यदर्शन, राजशास्त्र, धर्मशास्त्र भास्कराचार्य (द्वितीय), अष्टाध्यायी।*

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. समुचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

(i) धर्मशास्त्र .... नामक वेदाङ्ग के अन्तर्गत है।

(ii) साम–गान के आधार पर .... की रचना हुई।

(iii) .... वेद में चिकित्साशास्त्र का निरूपण हुआ है।

(iv) रसरत्नाकर .... की पुस्तक है।

(v) छन्दशास्त्र का प्राचीन ग्रन्थ .... है जो .... रचित है।

(vi) धर्मशास्त्र की पुस्तक .... है।

(vii) न्यायशासन का विवेचन .... ग्रन्थ में है।

(viii) दर्शनशास्त्र के दो भाग .... तथा .... है।

(ix) गौतम की रचना .... है।

6. आचार्य बलदेव उपाध्याय – *संस्कृत शास्त्रों का इतिहास*, शारदा–मन्दिर, वाराणसी, 1971 ई0।

7. आचार्य बलदेव उपाध्याय – *वैदिक साहित्य और संस्कृति*, शारदा संस्थान, वाराणसी, 1971 ई0।

8. डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी– *संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास*, रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद, 1989 ई0।

9. डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी –*वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2000 ई0।

10. डॉ0 सूर्यकान्त – *संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास*, ओरिएण्ट लौंगमैन, नई दिल्ली, 1971 ई0।

11. डॉ0 उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'– *संस्कृत साहित्य का इतिहास*, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, 1999 ई0।

12. S.N. Dasgupta and S.K. De- **History of Sanskrit Literature,**
Calcutta University, Calcutta, 1977 (Reprint.)

13. डॉ0 सुरेन्द्र कुमार – *महाकवि कालिदास के नाटकों में प्रेम चेतना*, चौखम्भा प्रकाशन पटना, 2007 ई0।